जयप्रकाश नारायण का समाजवादी चिंतन एक मूल्य शिक्षा

*पंकज कुमार दूबे**

जयप्रकाश नारायण का समाजवादी चिंतन अन्य समाजवादी चिंतकों से कुछ अलग एवं अनोखा रहा है। जहाँ इनके विचारों पर मार्क्सवाद का प्रभाव पड़ा वहीं अहिंसक आंदोलन के समर्थक महात्मा गाँधी के विचारों का भी प्रभाव पड़ा। इन्होनें सिर्फ विचार ही व्यक्त नहीं किया अपितु उन विचारों को प्रयोगात्मक रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत भी किया। जैसे स्वतंत्रता उपरांत समाज सुधार से संबंधित भूदान ग्रामदान आंदोलन से जुड़े रहे और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु अहिंसक आंदोलन का नेतृत्व भी किया एवं समग्र क्रांति का बिगुल फूँका। इन्हें इन कार्यों को मूर्त रूप देने की प्रेरणा स्वयं के समाजवादी विचारों से मिलती रही, जिनमें पर्याप्त मूल्य शिक्षा के तत्व समाहित हैं। आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज को इन मूल्यों की शिक्षा की नितांत आवश्यकता है, जिससे यह समाज एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज बन सकें जहाँ न हिंसा हो, न भ्रष्टाचार हो और ना ही शोषण हो एवं प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को एक अच्छा मानव कहलाने का अधिकारी बन सकें। प्रस्तुत लेख जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिंतन में सन्निहित इन्हीं मूल्य शिक्षा के तत्वों पर प्रकाश डालने का एक प्रयास है।

भारतीय समाज जहाँ बहुत ज्यादा विषमता है, कोई निम्न-आय वर्ग का है तो कोई उच्च-आय वर्ग का है, कोई मालिक है तो कोई नौकर है। लक्ष्य है इस देश को समाजवादी करने के बजाए तात्कालिक हल के रूप में बल प्रयोग किया जा रहा है। न तो मूल कारणो को गणराज्य के रूप में विकसित करना परंतु इस देश का ज्यादातर मुनष्य पूँजीवादी मानसिकता का है बस समाजवाद नारों तक रह गया है। इन परिस्थितियों में जो गरीब है वह और ज्यादा गरीब होता जा रहा है, जो दबा कुचला है उसकी स्थिति भी वैसी ही है बल्कि उससे भी बद्तर है, लोग इनका अपने फायदे के लिए प्रयोग कर रहे हैं।

**प्रवक्ता*, सीतापुर शिक्षा संस्थान, सीतापुर, उ.प्र.

इन समस्याओं के कारण अन्य बड़ी समस्याएँ खड़ी होती जा रही हैं जैसे आतँकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद इत्यादि। इन समस्याओं से निजात पाने हेतु हिंसक आंदोलन जारी हैं। सबसे बड़ी कमी है व्यवस्था में, जो कि उन समस्याओं का मूल कारण जाने बिना उन्हें हल कर पाने की कोशिश कर रही है। आज भी शोषण जारी है, सिर्फ स्वरूप बदला है। क्योंकि पूँजीवादी व्यवस्था की तरफ़ भारत बढ़ा चला जा रहा है। जहाँ सिर्फ दो वर्ग हैं एक नौकरी देने वाला दूसरा नौकरी करने वाला, एक शोषण करने वाला दूसरा जिसका शोषण हो रहा है। भारतीय समाज जहाँ ज्यादातर लोग गाँव में रहते हैं, गरीब हैं, वहाँ के लिए पूँजीवादी व्यवस्था तो ठीक हो ही नहीं सकती। इस लिए हमारे देश के कुछ महान व्यक्तियों ने इस देश को समाजवादी गणराज्य के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य रखा, जिसका भारतीय संविधान में भी उल्लेख किया गया है। यदि अपने देश में फैली इन समस्याओं से निजात पाना है तो आवश्यकता है एक वैचारिक आंदोलन की, जिसे समाजवाद कहते हैं और जिसका उत्कृष्ठ रूप है सर्वोदय अर्थात सबका उदय हो, सबका उत्थान हो।

भारतीय संविधान की उद्देशिका में वर्णित है कि ''हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को–

''सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत , अधिनियमित और आत्मर्पित करते हैं।''

उपर्युक्त पंक्तियों से यह परिलक्षित होता है कि हमारे देश के महापुरुषों ने भारत के लिए एक सुनहरा स्वप्न देखा, एक लक्ष्य निर्धारित किया इस देश को समाजवादी देश के रूप में विकसित करने का। परंतु क्या समाजवाद के बिना वास्तव में प्रजातंत्र आएगा? सामाजिक समता एवं बंधुता स्थापित होगी? क्या जो उपर्युक्त उद्देश्य भारत के लिए रखे गए वे पूर्ण हो पाएंगे? नहीं, फिर तो वह भारतीय संविधान की पुस्तक एवं नारों तक ही सीमित हो जाएगा। बिना समाजवाद न तो वास्तविक प्रजातंत्र होगा और न ही सामाजिक समता व बंधुता स्थापित होगी, पर यह समाजवाद है क्या, इसका क्या अर्थ है?

समाजवाद

समाजवाद समकालीन युग की सर्वाधिक लोकप्रिय व महत्वपूर्ण विचारधारा है जिसकी लोकप्रियता ने इसे अत्यधिक प्रचलित विचारधारा बना दिया।

सर्वप्रथम अपने महान ग्रंथ 'रिपब्लिक' में प्लेटो (417-347 बी. सी.) ने आदर्श राज्य का जो चित्रण किया उसमें समाजवाद के बीज़ निहित हैं। आदर्श राज्य के दो प्रथम वर्गों - शासक एवं सैनिक वर्ग के लिए वह निजी संपत्ति एवं परिवार का निषेध करता है। प्लेटो के अनुसार निजी

संपत्ति का मोह भ्रष्टाचार, दुराचार तथा अत्याचार का प्रमुख कारण है।

भारतवर्ष में भी इस समाजवादी चिंतन को विशेष महत्व दिया गया एवं पसंद किया गया। यहाँ तक कि स्वतंत्रता उपरांत भारत के विकास का जो प्रारूप तय हुआ वह समजावादी व्यवस्था पर आधारित था।

भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय रहे समाजवादी विचारक जयप्रकाश नारायण के अनुसार,

> *''समाजवादी समाज एक ऐसा वर्गहीन समाज होगा जिसमें सब श्रमजीवी होंगें। इस समाज में वैयक्तिक संपत्ति के हित के लिए मनुष्य के श्रम का शोषण नहीं होगा। इस समाज की सारी संपत्ति सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय अथवा सार्वजनिक संपत्ति होगी तथा अनार्जित आय और आय संबंधी भीषण असमानताएँ सदैव के लिए समाप्त हो जाएंगी। ऐसे समाज में मानव जीवन तथा इसकी प्रगति योजनाबद्ध होगी और सब लोग सबके हित के लिए जिएँगे।''*

जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद के तीन स्वरूप बताए—

1. जो समाजवाद हिंसा से, बलपूर्वक स्थापित किया गया हो, वह तामसिक यानी 'साम्यवाद' है।
2. जो समाजवाद कानून से राज्य-शक्ति द्वारा स्थापित किया गया हो, वह राजसिक समाजवाद यानी 'लोकतांत्रिक समाजवाद' हैं।
3. और जो समाजवाद स्वेच्छा पूर्वक जनता के विचारों तथा व्यवहारों में परिवर्तन लाकर स्थापित होता है, वह सात्विक समाजवाद यानी 'सर्वोदय' है।

जयप्रकाश का समाजवादी चिंतन – भारत के समाजवादी चिंतकों में जयप्रकाश नारायण का नाम प्रमुख रूप से आता है। इनका चिंतन अन्य समाजवादी चिंतकों से कुछ अलग रहा हैं क्योंकि यह प्रारंभ में कार्लमार्क्स के समाजवादी विचारों से प्रभावित होते हुए समाजवाद के उत्कृष्ठ रूप सर्वोदय को आत्मसात करते हैं। जयप्रकाश नारायण का समाजवाद सिर्फ व्यवस्था परिवर्तन की बात नहीं करता बल्कि यह वैचारिक आंदोलन की बात करता है।

जयप्रकाश की विचारधारा में हमेशा सकारात्मक दिशा में परिवर्तन होता रहा और यह परिवर्तन था समाजवाद से सर्वोदय। उनके विचारों को हम दो सोपान में वर्गीकृत कर सकते हैं—

1. स्वतंत्रता पूर्व समाजवादी विचारधारा
2. स्वतंत्रता उपरान्त सर्वोदय विचारधारा

(1) **स्वतन्त्रता पूर्व समाजवादी विचारधारा**– जयप्रकाश नारायण जब उच्च शिक्षा हेतु अमेरिका गए तो वहाँ वह कार्लमार्क्स के समाजवादी विचारों से बहुत प्रभावित हुए। वह हिंसक आंदोलन द्वारा व्यवस्था परिवर्तन करने में विश्वास करने लगे, और वह स्वतंत्रता तक इन्हीं विचारों से प्रभावित रहे।

(2) **स्वतंत्रता उपरांत समाजवादी विचारधारा**– स्वतंत्रता के उपरान्त महात्मा गाँधी के मृत्यु के बाद उनका हिंसा से मोह भंग हो गया और उन्होंने सर्वोदय की विचारधारा को आत्मसात कर लिया जो समता लाने हेतु वैचारिक आंदोलन पर बल देता है। उन्होंने कहा कि यह आंदोलन अहिंसक होना चाहिए, लोगों के विचारों में परिवर्तन ला कर ही समता स्थापित हो सकती है।

जय प्रकाश के विचारों में कभी भी कट्टरता नहीं रही, वह हमेशा प्रयोगवादी रहे। वह उन्हीं विचारों को ठीक मानते थे जो व्यक्ति व समाज को सही दिशा प्रदान कर सकें। उनके विचारों में भी सकारात्मक परिवर्तन आते रहे। शिक्षा ग्रहण करने के दौरान वह मार्क्सवाद से प्रभावित हुए तो महात्मा गाँधी की मृत्यु के उपरांत गाँधी के विचारों से। पहले वह हिंसक समाजवाद के समर्थक रहे तो बाद में अहिंसक समाजवाद (सर्वोदय) के समर्थक हो गए।

मुख्यत: जयप्रकाश नारायण के चिंतन पर मार्क्सवाद एवं सर्वोदय विचारधारा का प्रभाव पड़ा।

मार्क्सवाद का प्रभाव – सन् 1924-25 में जब जयप्रकाश विस्कांसिन विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे, तभी वे मार्क्सवादी साहित्य के और मार्क्सवादी विचारधारा के सम्पर्क में आए। उन्होनें आगे चलकर लिखा भी था,

''मार्क्सवाद ने समानता और बंधुता की एक और ज्योति मेरे लिए जला दी। केवल स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं थी। उसका अर्थ होना चाहिए, सबकी जो लोग सबसे नीचे के स्तर पर हैं, और सबसे पीछे हैं, उनकी भी स्वतंत्रता। और इस स्वतंत्रता में शोषण, भुखमरी और दरिद्रता से मुक्ति का भी समावेश होना चाहिए।''

जयप्रकाश की आँखों के सामने मार्क्सवादी समाजवाद का सपना था परंतु वह मार्क्सवाद को ऐसा स्वरूप देना चाहते थे, जो हिंदुस्तान की परिस्थिति के अनुरूप हो। वे कहते थे

''मैं मार्क्स को मानता हूँ। मैं स्टालिन से और दूसरे कइयों से अधिक अच्छा मार्क्सवादी हूँ। मार्क्सवाद मेरे विचारों का आधार है। लेकिन मैं मार्क्सवाद को एक विज्ञान मानता हूँ। विज्ञान सत्य की खोज करता है, और सत्य तो सापेक्ष वस्तु है। उसमें कट्टरता की कोई गुंजाइश नहीं। मनुष्य के ज्ञान भण्डार में से मिथ्या ज्ञान को उत्तरोत्तर दूर करते रहने से विज्ञान की प्रगति होती है। यदि मार्क्सवाद एक विज्ञान है, तो मार्क्स ने जो कहा वही अंतिम सत्य है, इस तरह की कट्टरता उसमें चल नहीं सकेगी। देशकाल के अनुसार उसमें आवश्यक सुधार और घटा बढ़ी करते रहना चाहिए। इसलिए हमे हिंदुस्तान की आज की परिस्थिति के अनुरूप मार्क्सवाद के स्वरूप को विकसित करना चाहिए।''

मार्क्सवाद का त्याग – महात्मा गाँधी की मृत्यु के उपरांत जयप्रकाश के विचारों में परिवर्तन होने लगा, वह मार्क्सवाद से सर्वोदय की तरफ़ बढ़ने लगे। तीव्र मनोमंथन और चिंतन के अंत में जयप्रकाश इस निश्चय पर पहुँचे कि मार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद मनुष्य को भलाई की और अच्छा बनने की प्रेरणा नहीं दे सकता। उन्होंने कहा,

''बहुत वर्षों तक मैने द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की देवी की पूजा की है। दूसरी किसी भी फिलॉसफी की तुलना में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की फिलॉसफी बौद्धिक दृष्टि से मुझे अधिक संतोषकारक लगी थी। यद्यपि फिलासफी की मेरी मुख्य खोज़ अभी भी अधूरी और अतृप्तकारक रही है, फिर भी एक बात मेरे सामने दीये की तरह स्पष्ट हो चुकी है कि किसी भी प्रकार का भौतिकवाद सच्चे अर्थ में मनुष्य को मनुष्य बनने के साधनों से ही बिल्कुल वंचित कर देता है। भौतिक संस्कृति में

मनुष्य के लिए अच्छा मनुष्य बनने की कोई बुद्धिगम्य प्रेरणा रहती ही नहीं। इसलिए मुझे पक्का विश्वास हो चुका है कि भलाई की और अच्छा बनने की प्रेरणा के लिए मनुष्य को भौतिकवाद से ऊपर उठना पड़ेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि सामाजिक नवनिर्माण का काम भौतिकवादी फिलासफी के अंतर्गत कभी सफल नहीं हो सकेगा।''

सर्वोदय का प्रभाव – सन् 1952 के पश्चात जब जयप्रकाश विनोबा भावे के सम्पर्क में आए तब उनके विचारों पर सर्वोदय का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा। अब वह हिंसक आंदोलन के द्वारा समाजवाद स्थापित करने के स्थान पर वैचारिक आंदोलन के माध्यम से लोगों के विचारों, व्यवहारों मे परिवर्तन लाकर समाजवाद की स्थापना पर जोर देने लगे।

मूल्य शिक्षा – जयप्रकाश जिस सर्वोदय की स्थापना करना चाहते थे वह किसी राजशक्ति द्वारा नहीं हो सकती थी, बल्कि इसके लिए वह प्रत्येक व्यक्ति के नैतिक, वैचारिक एवं जीवन मूल्यों में बदलाव कर उसे समाजवादी विचारों वाला मानव बनाना चाहते थे। उन्होंने कहा, ''समाजवादी और आदर्शवादी युग-युगांतरों से जिस नवसमाज की रचना करने का सुनहरा सपना देखते रहे हैं, वह तो जब तक स्वयं मुनष्य में परिवर्तन नहीं आएगा, तब तक किसी काल में भी सिद्ध नहीं होगा। केवल एक आर्थिक और राजनीतिक तंत्र का ही नाम समाजवाद नहीं। समाजवाद का संबंध समाजवादी सभ्यता और समजावादी मनुष्य से है। मेरे मन में यह बात दृढ़ है कि यदि समाजवादी संस्कृति का निर्माण करना है, समाजवादी मानव का निर्माण करना है, तो यह काम कानून के जरिए नहीं हो सकता। .... मुझे विश्वास हुआ कि समाजवाद का सही उद्देश्य और सही दर्शन सर्वोदय में है। सर्वोदय की स्थापना राजशक्ति द्वारा नहीं हो सकेंगी, बल्कि भूदान-ग्रामदान-आंदोलन तथा उसी प्रकार की दूसरी प्रक्रियाओं द्वारा नैतिक, वैचारिक एवं जीवन मूल्यों में क्रान्ति करके ही हो सकेंगी।''

जयप्रकाश के समजावादी चिंतन में एक अनोखापन रहा। उनका कहना था कि मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की यथोचित पूर्ति होनी चाहिए। वह व्यक्ति और समाज की भौतिक समृद्धि तो चाहते थे, परंतु इस भौतिक समृद्धि को ही अपना परम लक्ष्य माना जाए इसका विरोध करते थे। वह यह बिल्कुल नहीं चाहते थे कि मुनष्य भौतिक समृद्धि को ही अपना आराध्य देव बना ले और भौतिक पदार्थों की अतृप्त भूख को ही पूरा करने में हमेशा लगा रहे। वह चाहते थे कि भौतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के मध्य समुचित समन्वय होना चाहिए। अर्थात वह यह चाहते थे कि मनुष्य को जो भौतिक शिक्षा मिले उस पर अध्यात्म का अंकुश हो, अन्यथा वह समाज के लिए हितकर होने के बजाए अहितकर हो जाएगी। सोखदेवरा-आश्रम के लिए जो ग्राम निर्माण मण्डल बनाया गया था, उसके उद्देश्यों में उन्होंने लिखा था,

> *''मानव के जीवन मूल्यों में ऐसा परिवर्तन लाने का प्रयत्न करना, जिससे व्यक्ति-हित लोक-हित से और भौतिक आकाँक्षा आध्यात्मिक प्रेरणाओं से पोषित हों।''*

जयप्रकाश नारायण के समजावादी चिंतन में

निम्नलिखित मूल्य शिक्षा के तत्व प्रमुख रूप से मिलते है–

(क) भौतिकवाद से ऊपर उठ कर मानवीय मूल्यों को संरक्षण।

(ख) आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा।

(ग) **भौतिकवाद का निषेध एवं मानवीय मूल्यों की शिक्षा** – जयप्रकाश जी सामाजिक नव निर्माण हेतु प्रत्येक मुनष्य को भौतिकवाद से ऊपर उठाकर उसे मानवता की शिक्षा देना चाहते थे। प्रत्येक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के लिए कुछ अच्छा करना चाहिए। उसे परोपकारी होना चाहिए। भौतिकता मनुष्य को निजी स्वार्थ की तरफ़ ले जाती है, भौतिकवाद ही सारी बुराइयों की जड़ हैं, इसी कारण हिंसा है, भ्रष्टाचार है, अलगाव है, पूँजीवाद का बोलबाला है। इसलिए इनसे मनुष्य को दूर कर मानवता की शिक्षा, आत्मबोध की शिक्षा देनी चाहिए।

उन्होने कहा *''अगर सब कहीं भौतिकवाद का ही बोलबाला हो, तो मुनष्य अच्छा किसलिए बने? वह दूसरों के लिए क्यों खपे और खटें? नैतिक आचरण क्यों करें? न कोई ईश्वर है, न आत्मा है, न नीतिमत्ता है, और न इस जीवन से परे दूसरी कोई चीज़ है। मनुष्य जड़ द्रव्यों का एक समुच्चय मात्र है। आकस्मिक रीति से वह अस्तित्व में आ गया है, और वापस फिर जड़ द्रव्यों के अनंत महोदधि में समा जाने वाला है। ऐसी भौतिकवादी फिलासफी की नींव पर सामाजिक नवनिर्माण संभव नहीं है। एक अंतिम सत्य के रूप में जड़ भौतिकवाद का निषेध करके ही हम मनुष्य का नैतिक स्तर पर ऊँचा उठा सकते हैं, और उसे अपना सर्वोच्च विकास करने की प्रेरणा दे सकते हैं। भौतिकवाद से ऊपर उठकर ही मनुष्य स्वयं अपना नियंता बन सकता है और पूर्ण मानवता की साधना कर सकता है। इस प्रकार के मानवों के नवनिर्माण के बिना समाज का नवनिर्माण करना असंभव है। मैं केवल शरीर नहीं हूँ, चैतन्य हूँ , चारों ओर व्याप्त चैतन्य का अंश हूँ। इस चैतन्य की परिपूर्णता के किए मुझे अच्छा बनना चाहिए।''*

आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा – जयप्रकाश नारायण अहिंसा के माध्यम से व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन कर समाजवाद स्थापित करना चाहते थे, जिसके लिए उन्होंने आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा पर बल दिया। इनके अनुसार आध्यात्मिक शिक्षा का अर्थ धार्मिक शिक्षा नहीं थी, बल्कि आत्मबोध की शिक्षा थी। ऐसी शिक्षा जो मनुष्यों में यह भाव उत्पन्न करे कि जो हम हैं, वही आप हैं, हम सब एक ही हैं तभी सबमें समान भाव उत्पन्न होगा, समता का भाव विकसित होगा, समाजवाद स्थापित होगा। इन आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा पर अहिंसा ही आधारित हो सकती है। जब यह भाव उत्पन्न हो जाए कि हम और तुम दोनों एक ही हैं, हम सब एक ही चैतन्य के अंश हैं तो ना शोषण होगा, न हिंसा होगी, बल्कि अहिंसा, प्रेम, दया, करूँणा इत्यादि मूल्य मानव में उत्पन्न होंगे।

उनके अनुसार–

> *''आध्यात्मवादी बने बिना अहिंसा टिक नहीं सकेंगी बिना इस भावना के कि मैं और आप दोनों एक हैं, समाजवाद, सर्वोदय आदि किस तरह स्थापित हो सकेंगें? अतएव अध्यात्म तो अहिंसा और सर्वोदय की नींव है।''*

परंतु इस अध्यात्म को वह बुढ़ापे का विषय नहीं मानते थे बल्कि उनका विचार था कि व्यवस्था परिवर्तन करना जवानों का उत्तरदायित्व है, सर्वोदय स्थापित करना इन जवानों का कार्य है, इसलिए इन अध्यात्मिक मूल्यों की भी इन्हीं को ज्यादा आवश्यकता है क्योंकि वह जानते थे कि इन मूल्यों के अभाव में आंदोलन हिंसक हो जाएगा और स्वेच्छा से वैचारिक परिर्वतन कर समाजवाद स्थापित करने के बजाए बल प्रयोग कर समाजवाद स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा।

जयप्रकाश जी ने कहा,

''अब बात रही बुढ़ापे की और अध्यात्म की। इस देश का अध्यात्म बूढ़ों की वस्तु नहीं, जवानों की वस्तु रही हैं। जब हृषिकेश ने जीवन के कुरुक्षेत्र में अपूर्ण अध्यात्म का पाँचजन्य फूँका था, तब वे वृद्ध नहीं, बल्कि युवा थे। उस समय वे भारत की उत्कृष्ट तरुणाई के रथ के सारथी थे जब अपनी प्रिया की गोद में नवजात राहुल को सोता हुआ छोड़कर सिद्धार्थ अपनी अद्वितीय सांस्कृतिक क्रांति के पथ पर चल पड़े थे, तो वे वृद्ध नहीं युवा थे। अद्वैत के अनन्यतम शोधक शंकर ने जब अपनी दिग्विजय- यात्रा की थी, तब वे वृद्ध नहीं युवा ही थे जब विवेकानन्द ने शिकागो के मंच से वेदांत के सार्वभौम धर्म का उद्घोष किया था, तब वे वृद्ध नहीं युवा थे। दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद के दावानल मे कूद कर जब गाँधी ने अध्यात्म के आग्नेय शास्त्र का प्रयोग किया था, तब वे वृद्ध नहीं युवा थे। नहीं मित्रों ! आध्यात्म बुढ़ापे की बुढ़भस नहीं है, वह तो तरुणाई की उत्तुंगतम उड़ान है। जिस सांस्कृतिक क्रांति के बिना भारत की और भारतीयता की रक्षा करना कठिन मालूम होता है, उसके सैनिक और सेनापति तरुण ही हो सकते हैं। और, ऐसी मानवीय क्रांति अवश्य होगी। ऐसी एक क्रांति, जिसमें भारत का आध्यात्म व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन में उतर आएगा। तब व्यक्ति समाज के हित में अपना हित देखेगा। ऐसी क्रांति के बिना न तो समाजवाद आएगा और न साम्यवाद। सर्वोदय तो इस क्रांति का दूसरा नाम ही है।''

अत: जयप्रकाश के समाजवादी चिंतन में निम्नलिखित मूल्य शिक्षा के तत्वों का समावेश मिलता है—

(i) भौतिकवाद का निषेध
(ii) मानवता
(iii) निजी स्वार्थ का त्याग
(iv) परोपकार
(v) अहिंसा
(vi) प्रेम
(vii) करुणा
(viii) समता

उपर्युक्त सभी मूल्यों को मनुष्य में उतारने हेतु, एक वैचारिक परिवर्तन करने हेतु आवश्यक है — अध्यात्म। अर्थात सभी में आत्मबोध हो, और सभी को यह ज्ञान हो कि सब जीवधारी भी वही हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिंतन में विभिन्न मूल्य शिक्षा के तत्व

मिलते हैं जो किसी भी सभ्य समाज के लिए आवश्यक हैं। यह मूल्य-शिक्षा निम्नलिखित हैं—

(i) भौतिकवाद का निषेध कर मानवता की शिक्षा देना, निजी स्वार्थ छोड़कर सभी मनुष्यों के भले की सोचें ऐसी शिक्षा देना।

(ii) सभी आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा देना जिसमें प्रमुख हैं— अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा, समता इत्यादि। और यह शिक्षा तरुणों हेतु आवश्यक होनी चाहिए क्योंकि उन्हीं के ऊपर व्यवस्था परिवर्तन एवं समाजवाद स्थापित करने का उत्तरदायित्व है।

जयप्रकाश ने जिस अध्यात्म की बात की उनके अनुसार उस अध्यात्म का अर्थ है आत्मबोध अर्थात जो हम हैं वही तुम हो, और अन्य सभी भी वही हैं। यदि ऐसा वैचारिक परिवर्तन होगा तभी व्यक्ति के मन में अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा एवं समता का भाव टिका रहेगा।

आज की वर्तमान परिस्थिति में जहाँ एक तरफ़ मनुष्य अपने निजी स्वार्थ में भौतिकवाद को महत्व देता हुआ भ्रष्टाचार में लिप्त है, निजी संपत्ति को बढ़ाने में लगा हुआ है, प्रेम, दया, करुणा से दूर होता जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ़ अन्य इस समस्या से निकलने हेतु हिंसा का रास्ता अपना रहें हैं। ऐसी परिस्थिति में जयप्रकाश नारायण के इन मूल्य-शिक्षा के तत्वों को प्रभावी विधि द्वारा लोगों को देने की आवश्यकता है जिससे वास्तव में समाजवाद अर्थात सर्वोदय की स्थापना हो सकें।

संदर्भ

नारायण, जयप्रकाश, 2002. *समाजवाद से सर्वोदय की ओर*, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी.

——————— 1966. *शिक्षण और शांति,* सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी.

——————— 1974. *देश की तरुणाई को आह्वान,* सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी.

——————— 1974. *संपूर्ण क्रांति के लिए आह्वान,* सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी.

——————— 1978. *टूवर्ड्स टोटल रिवोलूसन -सर्च फार एन आइडियोलजी,* पापुलर प्रकाशन, बाम्बे.

——————— 2001. *मेरी विचार यात्रा-भाग I,* सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी,

——————— 1997. *मेरी विचार यात्रा-भाग II*, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी.

——————— 2002. *कारावास की कहानी,* सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी.

शाह, कान्ति, जयप्रकाश की जीवन यात्रा, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी.